BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

युगे युगीन भारत संग्रहालय

भावी पीढ़ियों के लिए भारत की सभ्यतागत विरासत का संरक्षण

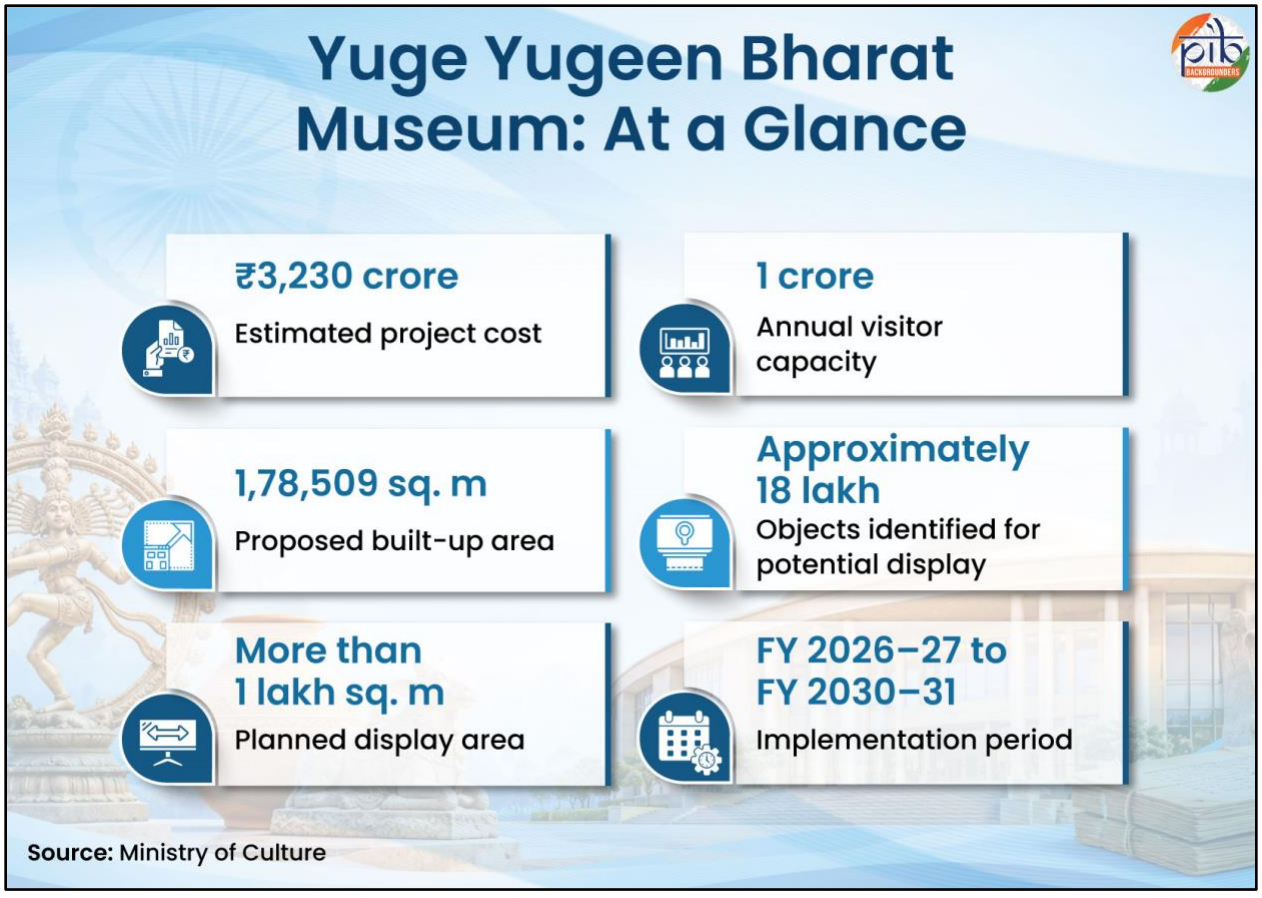
15 नवंबर, 2026

युगे युगीन भारत: विभिन्न युगों का एक संग्रहालय

भारत की 5,000 वर्षों से अधिक पुरानी सभ्यतागत विरासत कला, स्थापत्य कला, ज्ञान प्रणालियों, परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं की एक समृद्ध धरोहर को दर्शाती है। यह धरोहर सदियों के दौरान विकसित हुआ है। इस विरासत को संरक्षित एवं प्रस्तुत करने हेतु, **नई दिल्ली** के ऐतिहासिक नॉर्थ और साउथ ब्लॉक परिसर में **'युगे युगीन भारत संग्रहालय'** को एक प्रमुख राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसे 'जनता के संग्रहालय' के रूप में परिकल्पित किया गया है और यह भारत की सभ्यतागत यात्रा की निरंतरता, विविधता और समृद्धि को इसकी मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की एक समन्वित प्रस्तुति के माध्यम से प्रदर्शित करेगा।



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा **18 मई 2023** को घोषित, इस परियोजना को **11 नवंबर 2026 को आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति** से मंजूरी मिली। इसकी कुल अनुमानित लागत **3,230 करोड़ रुपये** है। संस्कृति मंत्रालय द्वारा विकसित किया जा रहा यह संग्रहालय, ऐतिहासिक नॉर्थ और साउथ ब्लॉक के स्थापत्य स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए भवनों के पुनर्उद्देश्यीकरण (एडैप्टिव रीयूज) के माध्यम से उन्हें सार्वजनिक सांस्कृतिक स्थलों के रूप में बदल देगा। नॉर्थ और साउथ ब्लॉक में ही पहले महत्वपूर्ण सरकारी कार्यालय अवस्थित हुआ करते थे। वैश्विक स्तर के एक संग्रहालय के रूप में परिकल्पित, यह सांस्कृतिक स्थल ऐतिहासिक संग्रहों, विषय-आधारित दीर्घाओं और प्रदर्शनी संबंधी आधुनिक तकनीकों का समावेश करके भारत की सांस्कृतिक विरासत को नागरिकों, शोधकर्ताओं और दुनिया भर से आने वाले आगंतुकों के लिए सुलभ बनाएगा।



ऐतिहासिक भवनों से लेकर एक विश्वस्तरीय संग्रहालय तक

'युगे युगीन भारत संग्रहालय' नई दिल्ली के ऐतिहासिक **नॉर्थ और साउथ ब्लॉक** को शासन के केन्द्रों से बदलकर सार्वजनिक सांस्कृतिक स्थलों में रूपांतरित कर देगा। **भवनों के पुनर्उद्देश्यीकरण (एडैप्टिव रीयूज)**

के माध्यम से विकसित यह परियोजना, इन ऐतिहासिक भवनों की स्थापत्य संबंधी विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ आधुनिक प्रदर्शनी स्थल तथा आगंतुकों के लिए सुविधाएं भी तैयार करेगी। इस संग्रहालय को एक ऐसे प्रमुख सांस्कृतिक स्थल के रूप में परिकल्पित किया गया है, जिसमें विरासत के संरक्षण को समकालीन संग्रहालय अवसंरचना के साथ जोड़ा गया है।

भवनों के पुनर्उद्देश्यीकरण (एडैप्टिव रीयूज) के माध्यम से विरासत का संरक्षण

- **ऐतिहासिक महत्व:** नॉर्थ और साउथ ब्लॉक 13 फरवरी 2026 तक सरकारी प्रशासन के केन्द्र रहे। यानी साउथ ब्लॉक के उद्घाटन के लगभग 95 वर्ष बाद तक, ये प्रशासनिक केन्द्र सक्रिय रहे। आजादी के बाद से साउथ ब्लॉक में प्रधानमंत्री कार्यालय स्थित था और इन भवनों में 16 प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल के दौरान मंत्रिमंडल की बैठकें आयोजित की गईं।
- **सार्वजनिक स्थलों के रूप में रूपांतरण:** सरकारी कार्यालयों के नए प्रधानमंत्री कार्यालय 'सेवा तीर्थ' और 'कर्तव्य भवनों' में स्थानांतरित हो जाने के बाद, इन दोनों भवनों को 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' के हिस्से के रूप में नए उपयोग के लिए तैयार किया जा रहा है।
- **स्थापत्य कला का संरक्षण:** यह परियोजना कम से कम हस्तक्षेप के जरिए इन भवनों के ऐतिहासिक स्वरूप, उनके बाहरी हिस्सों और मूल वास्तुशिल्प को संरक्षित करेगी।
- **मौजूदा स्थानों को नया रूप:** आंगन, गलियारों एवं कमरों को गैलरी व प्रदर्शनी क्षेत्रों के रूप में ढाला जाएगा, जिससे एक समग्र संग्रहालय का अनुभव प्राप्त हो सकेगा।
- **टिकाऊ और समावेशी डिजाइन:** पुनर्विकास के क्रम में संसाधनों के टिकाऊ उपयोग और सभी के लिए सुलभता को प्राथमिकता दी जाएगी।

वैश्विक स्तर का एक संग्रहालय

प्रस्तावित संग्रहालय प्रदर्शनी क्षेत्र के दृष्टि से दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक संस्थानों में से एक होगा और इसका बुनियादी ढांचा कुछ इस तरह तैयार किया जाएगा कि इसमें बड़ी संख्या में आगंतुक आ सकें।

- **प्रस्तावित निर्मित क्षेत्र:** नॉर्थ और साउथ ब्लॉक परिसर में लगभग **1,78,509 वर्ग मीटर**।
- **दुनिया का सबसे बड़ा डिस्प्ले एरिया:** इस संग्रहालय में **एक लाख वर्ग मीटर** से अधिक आकार का 'डिस्प्ले स्पेस' देने की योजना है। यह लूव्र (73,000 वर्ग मीटर), ब्रिटिश म्यूजियम (70,000 वर्ग मीटर) और हर्मिटेज (66,800 वर्ग मीटर) के डिस्प्ले एरिया से भी बड़ा होगा।

- **आगंतुक क्षमता:** इसे प्रतिदिन **30,000** और प्रतिवर्ष **एक करोड़ आगंतुकों** के लिए डिजाइन किया गया है।
- **आगंतुकों का प्रबंधन:** इस संग्रहालय में लोगों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने हेतु, समयबद्ध प्रवेश और भीड़ प्रबंधन प्रणालियों की योजना बनाई गई है।
- **सार्वजनिक सुविधाएं:** प्रस्तावित सुविधाओं में बच्चों के लिए जगह, फूड कोर्ट, स्मृति चिह्न की दुकानें और प्रस्तुतियों के लिए स्थान तथा सुगम्य सार्वजनिक स्थान शामिल हैं।

इस प्रकार, इस संग्रहालय के विकास में ऐतिहासिक रूप से दो महत्वपूर्ण भवनों का संरक्षण शामिल होगा। साथ ही, भारत और विदेशों से आने वाले नागरिकों एवं आगंतुकों के लिए एक बड़े तथा सुलभ सांस्कृतिक संस्थान का निर्माण भी किया जाएगा।

भारत की सभ्यतागत यात्रा को जीवंत बनाना

'युगे युगीन भारत संग्रहालय' विशेष रूप से तैयार की गई विषय-आधारित दीर्घाओं, ऐतिहासिक संग्रहों और जीवंत अनुभवों के जरिए भारत की सभ्यतागत यात्रा को प्रस्तुत करेगा।

चरणबद्ध विकास एवं कार्यान्वयन

इस संग्रहालय को विभिन्न चरणों में विकसित किया जाएगा। इससे गैलरियों और प्रदर्शनियों का धीरे-धीरे समावेश किया जा सकेगा।

- **कार्यान्वयन अवधि: वित्त वर्ष 2026-27 से वित्त वर्ष 2030-31 तक।**
- **पहली गैलरी: 'अलंकार गैलरी' (अडॉर्नमेंट गैलरी)** के 2027 के उत्तरार्ध में नॉर्थ ब्लॉक में आम जनता के लिए खुलने की उम्मीद है।
- **गैलरियों का विस्तार:** बाद के चरणों में और अधिक विषय-आधारित गैलरियां जोड़ने हेतु एक मॉड्यूलर दृष्टिकोण तैयार किया जा रहा है।
- **परियोजना की निगरानी:** कार्यान्वयन की प्रक्रिया में समन्वित परियोजना प्रबंधन, डिजाइन एवं तकनीकी निगरानी, गुणवत्ता आश्वासन तथा समय-समय पर की जाने वाली निगरानी शामिल होगी।

इस संग्रहालय से भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और उसे जनता के सामने प्रस्तुत करने के कार्यों को मजबूती मिलने की उम्मीद है। साथ ही इससे शिक्षा, शोध, सांस्कृतिक जुड़ाव और पर्यटन के अवसर भी सृजित होंगे।

विषय-आधारित दीर्घाएं एवं प्रदर्शनियां

इस संग्रहालय में स्थापत्य कला एवं शहरी परिदृश्य, गणित एवं खगोल विज्ञान, भाषाएं एवं लिपियां, आस्था एवं आध्यात्मिकता, तथा 'भारत कनेक्ट्स - व्यापार और विचार' जैसे विषयों पर आधारित गैलरियां होंगी।

ये उन विषयों में से हैं जिन्हें इस संग्रहालय के लिए चुना गया है। मॉड्यूलर दृष्टिकोण के जरिए यहां कुछ और गैलरियां बनाने की भी योजना है।



भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाने वाला एक संग्रह

- इस संग्रहालय में संभावित रूप से प्रदर्शित किए जा सकने वाले लगभग **18 लाख** वस्तुओं की पहचान की गई है। इनमें देश भर के विभिन्न संस्थानों के संग्रह शामिल हैं।
- चिह्नित की गई वस्तुएं **राष्ट्रीय संग्रहालय**, संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले अन्य संग्रहालयों, **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के 52** पुरातात्विक स्थल संग्रहालयों, विभिन्न राज्यों के संग्रहालयों और निजी संग्रहों से ली गई हैं।
- इन वस्तुओं का इस संग्रहालय की प्रदर्शनियों में समावेश करने के तरीकों को निर्धारित करने हेतु सामग्रियों और संग्रह का विश्लेषण किया जा रहा है।

- इस परियोजना में विरासत की वस्तुओं के संरक्षण एवं प्रबंधन में सहायता हेतु, संग्रह को रखने तथा उसे सुरक्षित रूप से सहेजने की विशेष सुविधाएं भी शामिल हैं।

तकनीक और संवादात्मक अनुभव

इस संग्रहालय की प्रदर्शनियों को अधिक आकर्षक एवं सुलभ बनाने के हेतु आधुनिक तकनीकों का समावेश किया जाएगा।

- **मुग्ध करने वाले अनुभव:** संवादात्मक व्याख्या और कहानी सुनाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने हेतु **ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर), वर्चुअल रियलिटी (वीआर) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)** का सुनियोजित उपयोग।
- **डिजिटल दस्तावेजीकरण:** 5 नवंबर 2026 को घोषित संस्कृति मंत्रालय और **'गूगल आर्ट्स एंड कल्चर'** के बीच होने वाले सहयोग में, इस संग्रहालय के ऐतिहासिक भवनों और संग्रहों के डिजिटलीकरण के प्रयास शामिल हैं।
- **संग्रहालय संबंधी आधुनिक बुनियादी ढांचा:** इस संग्रहालय के संचालन तथा आगंतुकों के अनुभवों को बेहतर बनाने हेतु बुद्धिमान भवन प्रणालियों (इंटेलिजेंट बिल्डिंग सिस्टम), प्रदर्शनी तकनीकों और संरक्षण संबंधी सुविधाओं का समावेश।

भावी पीढ़ियों के लिए एक सांस्कृतिक संस्थान

भारत की सभ्यतागत विरासत को सहेजने एवं प्रदर्शित करने के साथ-साथ, 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' सांस्कृतिक पर्यटन, शिक्षा एवं शोध में योगदान देगा। साथ ही, यह जनभागीदारी के अवसर भी सृजित करेगा। एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थान के रूप में, यह **विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, विद्वानों, सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों, आम जनता तथा देश-विदेश के पर्यटकों** सहित विविध प्रकार के आगंतुकों के लिए लाभकारी साबित होगा। यह उन्हें भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत को जानने और सराहने का अवसर प्रदान करेगा।

इस परियोजना के निर्माण एवं संचालन के विभिन्न चरणों के दौरान प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की उम्मीद है। इससे कारीगरों, शिल्पकारों, शोधकर्ताओं, संग्रहालय विशेषज्ञों, डिजाइनरों, कलाकारों और अन्य रचनात्मक पेशेवरों के लिए अवसर सृजित होने की संभावना है। साथ ही, यह आतिथ्य और पर्यटन से जुड़े क्षेत्रों में भी आजीविका को सहारा देगा। 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने हेतु, यह परियोजना एक व्यवस्थित वेंडर विकास प्रक्रिया के जरिए विश्वस्तरीय संग्रहालय संबंधी सामग्रियों एवं उत्पादों के घरेलू

निर्माण को प्रोत्साहित करेगी। इससे भारतीय कारीगरों, निर्माताओं, संरक्षण विशेषज्ञों और तकनीकी प्रदाताओं के लिए नए अवसर सृजित होंगे।

उम्मीद है कि यह संग्रहालय टिकटों की बिक्री, खान-पान की सुविधाओं, कार्यक्रमों एवं स्थान के किराये, डिजिटल अनुभवों, निर्देशित पर्यटनों, खुदरा दुकानों और आगंतुकों से संबंधित अन्य सेवाओं के जरिए **निरंतर राजस्व अर्जित** करेगा। **प्रति वर्ष एक करोड़ आगंतुकों** को संभालने की क्षमता वाले बुनियादी ढांचे से लैस, इस परियोजना का उद्देश्य दीर्घकालिक सांस्कृतिक संरक्षण को आम लोगों की सुलभता और राजस्व अर्जित करने वाली आगंतुक संबंधी सेवाओं के साथ जोड़ना है। इसके शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन संबंधी लाभों का उद्देश्य भारत तथा विदेशों से आने वाले आगंतुकों तक इनका विस्तार करना है।

संदर्भ

संस्कृति मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2334964&utm&reg=48&lang=2

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2333271&utm&reg=48&lang=2

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2029510

प्रधानमंत्री कार्यालय

https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=1952361&reg=48&lang=1

मंत्रिमंडल

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2228026&utm&reg=48&lang=2

पीआईबी शोध

पीके/केसी/आरटी/आर